जनजातीय उद्यमिता पर शोध करेगा आईआईएम

रांची, प्रमुख संवाददाता। भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), रांची ने अपनी रणनीतिक योजना- आईआईएम रांची ऐट 2030 में प्रभावशाली अनुसंधान को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की घोषणा की है। इसके तहत संस्थान भारतीय व्यापार प्रणाली पर शोध करने की पहल करने जा रहा है। यह शोध कार्य जनजातीय उद्यमों पर विशेष रूप से केंद्रित होने के साथ-साथ जनजातीय अर्थव्यवस्था और इसकी विशेषता के अध्ययन पर आधारित होगा। इस शोध अध्ययन को एक संपादित पुस्तक प्रारूप में प्रकाशित किया जाएगा।

आईआईएम, रांची के निदेशक प्रो दीपक कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि भारत में व्यापार प्रणाली उतनी ही पुरानी है, जितनी इसकी सभ्यता। प्राचीन भारत में कृषि और व्यापार प्रमुख व्यवसाय रहे। इस शोध के माध्यम से भारत की वर्तमान संस्थागत व्यवस्था को आकार देने वाले पारंपरिक/स्वदेशी और आधुनिक संस्थानों की परस्पर क्रिया को सामने लाने का प्रयास किया जाएगा।

सेंटर के हैं खास उद्देश्य

आईआईएम का बिरसा मुंडा सेंटर फॉर ट्राइबल अफेयर्स, का उद्देश्य आदिवासी उद्यमिता पर एक शोध करना है, जो भारत में आदिवासी उद्यमों के क्षेत्र पर वैश्विक प्रभाव पैदा करने का इरादा रखता है। आदिवासी अर्थव्यवस्था का दायरा अकादमिक और नीतिगत चर्चाओं में सबसे आगे है। जनजातीय उद्यमिता पर अनुसंधान जनजातीय क्षेत्रों में जनजातियों के स्वामित्व वाले उद्यमों की व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करेगा, जिसमें सामाजिक और लाभ कमाने वाले दोनों उद्यम शामिल हैं।

Hindustan, 20.07.2023, Pg. 06